बी. ए. पार्ट - I

अध्ययन सामग्री — हिन्दी प्रतिष्ठा

द्वितीय पत्र - प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पाठ्य पुस्तक : कबीर वचनावली
सं० - अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

दिनांक - 19.05.2020

डॉ० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य
हिन्दी विभाग
भारती मंडन महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी

व्याख्या का विषय :-
प्रेम 'शीर्षक' की साखियाँ
(क्र०सं० - 126 से 130)

साखी क्र. सं. 126

" प्रीतम को पतियाँ लिखू जो कहुं होय विदेस।
तन में मन में नैन में ताको कहा सँदेस ॥"

प्रस्तुत दोहा कबीर वचनावली के 'प्रेम' शीर्षक से उद्धृत है। कबीरदास जी ने अनंत प्रेम को परिभाषित किया है। वे नायिका से कहवाते है कि अगर प्रियतम हमारे परदेश रहते तो मैं पत्र लिख कर उनको अपनी मन की अवस्था बतलाती। परन्तु वो तो हमारे तन, मन और आँखों में रहते है उनको कैसे पत्र लिखूं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि कबीर ने यहाँ बाह्याडंबर को निरर्थक बताया है वे कहते है कि परम पिता परमेश्वर अगर मंदिर-मस्जिद या किसी धर्मस्थल पर निवास करते तो मैं उनको पूजा-पाठ या अन्य धार्मिक तरीकों से उन्हें मना लेता। परन्तु वे तो हमारे रोम-रोम में बसे है। मैं उन्हें फिर मंदिर-मस्जिद में क्यों खोजू। मैं तो उन्हें जब भी ध्यान करती हूँ सदैव उन्हें अपने अंतर आत्मा में पाता हूँ।

साखी क्र० सं० 127

" अगिनि आँच सहना सुगम सुगम खडक की धार।
नेह निभावन एकरस महा कठिन ब्योहार ॥"

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ :—
अगिनि = आग, आँच = आग की लपट,
खड़क = तलवार, सुगम = आसान, नेह = प्रेम
एकरस = सदा एक ही जैसा।

प्रस्तुत दोहा में कबीरदासजी प्रेम की प्रकृति को बताते हुए कहते हैं कि इस संसार में आग की लपट को सहना आसान है, यहाँ तक की तेज तलवार की धार को भी सहना आसान है। परन्तु पूरे संसार में अगर कुछ कठिन है तो वो किसी के साथ एक जैसा सदा प्रेम का संबंध बनाए रखना है क्योंकि समय और परिस्थिति के साथ मनुष्य के आचार और व्यवहार में परिवर्तन आना स्वाभाविक है।

दोहा सं०/साखी क्र.सं. – 128

"नेह निभाए ही तनैं सोचे बनै न आन।
तन दे मन दे सीस दे नेह न दीजै जान॥"

प्रस्तुत दोहा में कबीर दास जी नेह अर्थात् प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि प्रेम का निर्वाह करने पर ही तन का सुख है, कल्याण है। इसके अलाव किसी दूसरी बातो से कल्याण नही है। जीवन को सफलता नहीं मिल पायेगी। अर्थात् जीवन में प्रेम एक आवश्यक तत्व है। इसलिए कबीरदासजी कहते है कि प्रेम को निभाने में यदि तन, मन और शीश भी देना पड़े तो दे दे। किन्तु नेह अर्थात प्रेम को नहीं जाने दे। अर्थात ईश्वर के प्रति स्नेह बनाए रखे। तभी हमारा (मनुष्य का) कल्याण है। इसके लिए हमें काम-क्रोध, लोभ-मोह, ईर्ष्या-द्वेष आदि से बचना चाहिए।

साखी क्र.सं. — 129

"काँच कथीर अधीर नर ताहि न उपजै प्रेम।
कह कबीर मसनी सहै कै हीरा कै हेम॥

प्रस्तुत दोहा कबीर वचनावली के 'प्रेम' शीर्षक से उद्धृत है। कबीर दास जी

Scanned with CamScanner

कहते हैं कि अपरिपक्व, बेचैन और अस्थिर मन में प्रेम की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। जब तक मन स्थिर चित्त और शांत नहीं रहेगा तब तक मन में प्रेम की उत्पत्ति संभव नहीं है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक बड़े हथौड़े की चोट हीरा और सोना जैसा बहुमूल्य पदार्थ नहीं सह सकता अर्थात् कबीर कहते हैं कि प्रभु की भक्ति के लिए प्रेम आवश्यक है और प्रेम का वास शांत और स्थिर मन में ही हो सकता है। अतः हमें ईश्वर की प्राप्ति तभी संभव है जब हम शांत और स्थिर चित्त से उनका ध्यान करें।

साखी क्र.सं. 130

"कसत कसौटी जो टिकै शब्द सुनाय।।
सोई हमरा बंस है कह कबीर समुझाइ।।

शब्दार्थ :- कसौटी - परीक्षा, जाँच, परख। बंस - वंश, परिवार, कुल

प्रस्तुत दोहा में कबीर दास जी कहते हैं कि परमेश्वर (ईश्वर) प्राप्ति का मार्ग अत्यंत कठिन है जो इस कठिन मार्ग पर चल सकते हैं वही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। इसलिए वह कहते हैं कि जो ईश्वर की प्राप्ति की कसौटी पर सफलता पूर्वक खड़ा उतरेगा वही हमारा वंश है। अर्थात् कबीर कहते हैं कि जो ईश्वर की प्राप्ति के मार्ग पर मोह-माया, घृणा-द्वेष, लोभ आदि को छोड़कर चलेगा। जो सांसारिक दुनियाँ के प्रलोभन को त्याग कर सिर्फ ईश्वर की भक्ति में ही लगा है वैसा व्यक्ति ही मेरा बंधु है, भाई है। और जो सांसारिक माया में उलझे पड़े हैं वे भी अपने जीवन को सफल बनाने के लिए ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर चलें। मैं उन्हें अपना समझुंगा। अर्थात् कबीरदास जी जाति-वर्ण से ऊपर उठकर एक भक्त समाज की रचना करना चाहते हैं जिसका न कोई जात न धर्म हो। सब एक हो।

Scanned with CamScanner